#३१: सत्यता-७: धर्म ही सत्य है |

दिनांक -८/१२/२०११

धर्म ही सत्य है | मानव धर्म का परिभाषा सह-अस्तित्व विधि से यह पाया गया है कि मानव धर्म सुख है | इसके संदर्भ में मानव का अध्ययन से पता चला है कि सर्वमानव, सर्वदेश कालीय मानव सुखापेक्षा से जंगल युग से भौतिकवादी युग तक अथवा अत्याधुनिक युग तक पहुंचा है | इसमें सकारात्मक भाग यही रहा कि मानव जात हर देश काल में, भले ही छोटे समुदाय में क्यों न हो, सभी ने जीवों से अच्छा जीने का प्रयत्न किया, साथ में जीवों पर विजय पाने के लिये भी काम किया | यही समुदाय चेतना में एक समुदाय दूसरे समुदाय पर विजय पाने के लिये करता है | समुदाय चेतना में तर्क विधि को शास्त्र माना है | तर्क विधि से जो नहीं मानते उन पर शस्त्र विधि का प्रयोग होता है अथवा तर्क विधि जब नहीं चलती है | इस प्रकार सभी समुदाय शस्त्र सम्पन्न होना स्वीकार किया है | इसका मतलब शक्ति प्रदर्शन अथवा शस्त्र प्रदर्शन है | इसके मूल में अथवा ऐसे प्रदर्शन के मूल में परस्पर मानसिकता विरोध का ही है | विरोध के बिना शक्ति प्रदर्शन का कोई चर्चा ही नहीं है | वैचारिक एकरूपता न होना इसमें प्रधान बात है | वैचारिक एकरूपता के मूल में चेतना ही है | जीव चेतना विधि से एकरूपता का अर्थ बनता ही नहीं | जीव चेतना विधि से मानव को भोग और संघर्ष- दो ही हाथ लगा है | इसी का नाम है विकास | उपभोक्तावाद भोग विधि का प्रचलित भाषा है | संघर्ष के बिना रोजी- रोटी का सम्भावना नहीं है- यह प्रचलित मान्यता तथा भाषा है | यही भविष्य की बात कहा जाता है | इसी को विकास, उत्थान, जागृति कहा जाता है |

इस विधि से मानव जात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों मानव लक्ष्य से भटक चुके हैं | प्रमाण रूप में यही देखने को मिलता है, फल परिणाम रूप में यही मिलता है | इसीका नाम है व्यक्तिवाद, समुदायवाद | जैसे जीवों में अनेक प्रकार के समुदाय एवं जाति होता है, इसी प्रकार से मानव में अनेक प्रकार की जाति एवं समुदाय हो चुका है | अभी तक के आंकलन के अनुसार सुप्रीप कोर्ट में न्याय का प्रमाण नहीं है | हर समुदाय अपना सुप्रीप कोर्ट बना रहा है | न्याय विहीन न्यायपालिका से उपकार क्या होगा? वही हो रहा है | इस विधि से सोचने पर सुप्रीप कोर्ट जैसा प्रधान अधिकार सम्पन्न केन्द्र न्याय से रिक्त है, लेकिन अधिकारी न्यायमूर्ति कहलाते हैं हिंदी भाषा के अनुसार | अभी जरूरत से ज्यादा तर्कसंगत करने की व्यवस्था न्यायपालिका में है | तर्कसंगत करने के स्वरूप में मूल रूप में पहला संविधान, दूसरा गवाहियाँ, तीसरा न्यायमूर्ति का विवेक के अनुसार तर्कसंगत निष्कर्ष निकालने का कोशिश करते हैं | एक न्यायालय जिस तर्क से निर्णय दिया रहता है, दूसरा न्यायालय दूसरा तर्क विधि से उसे निरस्त कर देता है | तब न्यायालय का न्याय कहाँ साधन हुआ | हर न्यायालय में प्रस्तुत प्रकरण का दो पक्ष होता ही है | दोनों पक्ष सम्मत होना आवश्यक है | यह मानव चेतना परम्परा में सम्भवहै | जीव चेतना में जीते हुए कोई सम्भावना नहीं है | फलतः धर्म एवं सत्य सफल होने का सम्भावना नहीं है | न्याय का परिभाषा नर-नारी में समानता, गरीबी-अमीरी में संतुलन के आधार पर है | समाधान के आधार पर सत्य समझ में आता है |

सत्य अपने स्वरूप में सहअस्तित्व ही है | सहअस्तित्व का अध्ययन अभी तक मानव परम्परा में नहीं किया गया है अथवा अध्ययनगम्य नहीं हुआ है | मानव ही ज्ञानावस्था में प्रस्तुत है | प्रस्तुत होने का मतलब यही है कि समझदार होने के लिये अधिकार सम्पन्न है | इसका गवाही मानव जीवों से अच्छा जीने का प्रयत्न किया है | इसमें मानव सफल है | इस सफलता में मानव गर्व सम्पन्न है न कि समाधान सम्पन्न | समाधानपूर्वक ही मानव सुखी होता है | समाधानपूर्वक

जीना न्यायपूर्वक होता है | नियम ही न्याय है, न्याय ही धर्म है, धर्म ही सत्य है | सह-अस्तित्व सहज ज्ञान के बिना नियमों का पालन नहीं हो पाता | इसलिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा की आवश्यकता बन चुकी है | विकसित चेतना विधि से अथवा चिंतन बोध अनुभव विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित करना बनता ही है | इसे देखा गया है, इसमें कोई अड़चन नहीं है | अपराध करने वाला भी समाधान चाहता ही है | समाधान के मूल में सुख होता है | सह-अस्तित्व परम सत्य के रूप में स्थित है | यही मानव कुल में धारक- वाहक का प्रमाण है | सहअस्तित्व सहज विधि ही नियम है | सहअस्तित्व सहज विचार ही समाधान है | सहअस्तित्व सहज अनुभव ही परम सत्य है | यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से बोधगम्य होना पाया गया है | इसके लिये प्रयत्नशील अनेक लोग प्रस्थित हो चुके हैं |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत